ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

मई 2018 (द्वितीय)

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

श्री रमेश आर्य सभा वेदप्रचार अधिष्ठाता एवं उनकी टीम द्वारा किए गए वेद प्रचार कार्य की झलकियां।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 8

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मई, 2018 (द्वितीय)

16 से 30 मई, 2018 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (वेद) 2
2. सच्चे मानव की तलाश 4
3. पावन-पावन दयानन्द 6
4. साम्प्रदायिकता से मुक्त हो भारत 7
5. भजन–तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी 8
6. संघर्ष का दूसरा नाम–महात्मा अत्तरसिंह स्नेही 9
7. जोशीला वीर शहीद कर्तारसिंह 11
8. शेषभाग-प्रकरण 12
9. समाचार-प्रभाग 13

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

जिज्ञासा-विमर्श (वेद)

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

गतांक से आगे....

जिज्ञासा-1. कुछ विद्वान् वेदों का काल पाश्चात्य विद्वानों के आधार पर 2000 या 3000 ईसा पूर्व ही मानते हैं, क्या यह ठीक है और मैक्समूलर ऋग्वेद को दुनिया के पुस्तकालयों की सबसे पुरानी पुस्तक मानता है, क्या मैक्समूलर की यह मान्यता ठीक है? क्या हम आर्यों को भी इसी के अनुसार मानना चाहिए? कृपया, मार्गदर्शन करें।

–अनिरुद्ध आर्य, दिल्ली

समाधान-वेदों का काल जब से मानवोत्पत्ति हुई है, तभी से है। आज इस काल को महर्षि दयानन्द के अनुसार 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 115वाँ वर्ष (2014) के अनुसार चल रहा है। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई वेदों की काल गणना ठीक नहीं है, क्योंकि इनके द्वारा की गई काल गणना निराधार, पक्षपातपूर्ण और कपोल कल्पना मात्र है। इस गणना के लिए इन विद्वानों के पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है। जब हमारा लाखों वर्ष पुराना इतिहास सप्रमाण हमें प्राप्त हो रहा है, तब हम इनकी कुछ हजार वर्ष पूर्व की बात कैसे स्वीकार कर लें? हाँ, इनकी बात को वह स्वीकार कर सकता है जो अपने ऋषियों, महापुरुषों से प्रभावित न होकर, पाश्चात्य संस्कृति व विद्वानों से प्रभावित रहा हो।

कुछ लोगों की निराधार व अल्पज्ञान भरी बात है कि ऋग्वेद की रचना सबसे पहले हुई और इसके बाद अन्य वेदों की। ऐसी मान्यता वाले लोग अथर्ववेद को तो ऋग्वेद से बहुत बाद का मानते हैं। इस बात का भी उनके पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

हमारे ऋषियों के अनुसार चारों वेदों का काल एक ही है, एक ही साथ एक ही समय परमेश्वर ने चार ऋषियों के हृदयों में चारों वेदों का अलग-अलग ज्ञान दिया, अर्थात् अग्नि ऋषि को ऋग्वेद का, वायु ऋषि को यजुर्वेद का, आदित्य ऋषि को सामवेद का और अङ्गिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान दिया। ऋषियों ने ऐसा कहीं नहीं लिखा कि चारों वेदों की उत्पत्ति अलग-अलग समय में हुई। हमें वेद व ऋषियों के अनेक प्रमाण प्राप्त हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि चारों वेद एक ही समय में उत्पन्न हुए। जैसे–

यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपाः। अथर्व० 4.35.6

ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्तऋषयोग्नयः।

अथर्व० 19.9.12

इन दोनों मन्त्रों में वेद शब्द का बहुवचनान्त वेदाः शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह वेदाः शब्द चारों वेदों का संकेतक है।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥

ऋ० 10.90.9, यजु० 31.7

यस्मिन्नृचः साम यजुꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथानाविवाराः। यजु० 34.5

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्-
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः॥ अथर्व० 10.7.20

स्तोमश्च यजुश्चऽऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च।

यजु० 18.29

ऋचो नामास्मि यजुꣳषि नामास्मि सामानि नामास्मि।

यजु० 10.67

स उत्तमां दिशमनुव्यचलत्॥ तमृचश्च सामानि च यजूंषि च ब्रह्म चानुव्यचलन्॥ अथर्व० 15.6.7-8

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्
यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः॥

श.ब्रा. 14.5.4.10 व बृहद्०उप० 34.10

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः। मु० 5.1.1.5

इत्यादि अनेक वेद व ऋषियों के प्रमाण सिद्ध करते हैं कि चारों वेदों का काल एक ही है।

आप मैक्समूलर की मान्यता के विषय में भी जानना चाहते हैं कि उनकी मान्यता ठीक है या नहीं। मैक्समूलर ने तथाकथित भाषाशास्त्र के आधार पर वेदों की रचनाकाल की सम्भावना सर्वप्रथम 1859 ई० में प्रकाशित अपनी पुस्तक **'ए हिस्ट्री ऑफ एशियट संस्कृत लिटरेचर'** में की थी। उनकी यह कालावधि किसी तथ्य पर आश्रित न होकर विशुद्ध कल्पना पर अवलम्बित थी, किन्तु यह मान्यता इतनी बार दुहराई गई कि परवर्ती समय में आधुनिक

इतिहासकारों में बिना सोचे-समझे स्थापित-सी मानी जाने लगी, लेकिन स्वयं मैक्समूलर ने 1889 में 'जिफोर्ड व्याख्यामाला' के अन्तर्गत अपने इस मत पर सन्देह प्रकट किया था और ह्विटनी जैसे पाश्चात्य व प्रो० कुञ्जन राजा प्रभृति भारतीय इतिहासकारों ने भी मैक्समूलर के भाषाशात्र के आधार पर वेदों के काल सम्बन्धी मत का जोरदार खण्डन किया था।

दूसरा जो मैक्समूलर ऋग्वेद की दुनिया की सबसे पुरानी पुस्तक कहता है, उसकी यह बात वेदों की रचना के सम्बन्ध में भ्रम पैदा करने के उद्देश्य से कही गई प्रतीत होती है। ऋषियों-महर्षियों के आधार पर आर्यसमाज की दृढ़ मान्यता के विपरीत ये वेदों का क्रमिक विकास सिद्ध करते हैं, जिससे वेद ईश्वरीय रचना न होकर मानवीय रचना सिद्ध हो सके।

इस सारे प्रसंग को मैक्समूलर की इन मान्यताओं के सन्दर्भ में भी देखा जाना चाहिए कि वह वेदों को बाइबिल से निचली श्रेणी का मानता है। कैथोलिक कॉमनवैल्थ के दिये गये एक साक्षात्कार में यह पूछे जाने पर कि विश्व में कौन-सा धर्मग्रन्थ सर्वोत्तम है, तो मैक्समूलर ने कहा-

"There is no doubt, however, that ethical teachings are far more prominent in the old and New Testament than is any other sacred book." He also said "It may sound prejudiced, but talking all in all, I say the New Testament. After that, I should place the Quran which in its moral teachings is hardly more than a later edition of the New Testament. Then would follow... according to my opinion, the Old Testament. The southern Buddhist Tripitika... The Veda and the Avesta."

(LLMM, Vol. II, PP. 322-323)

अर्थात् ''इसमें कोई सन्देह नहीं कि यद्यपि किसी भी अन्य 'पवित्र पुस्तक' की अपेक्षा (ईसाइयों के धर्मगन्थ) ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट में नैतिक शिक्षायें प्रमुखता से विद्यमान हैं। उसने यह भी कहा-यह भले ही पक्षपातपूर्ण लगे, लेकिन सभी दृष्टियों से मैं कहता हूँ कि न्यू टेस्टामेंट सर्वोत्तम है। इसके बाद मैं कुरान को कहूँगा जो कि अपनी नैतिक शिक्षाओं में न्यू टेस्टामेंट के नवीन संस्करण के लगभग समीप है। उसके बाद...मेरे विचार से ओल्ड टेस्टामेंट (यहूदियों का धर्मग्रन्थ), दी सदर्न बुद्धिस्ट त्रिपिटिका, (बौद्धों का धर्मग्रन्थ) फिर वेद और अवेस्ता (पारसियों का ग्रन्थ) है।''

अत: आर्यों को वेद के सन्दर्भ में मैक्समूलर जैसे लोगों के मत को उद्धृत करने से बचाना चाहिए। इसके स्थान पर ऋषियों-महर्षियों के मत को रखना चाहिए। लेकिन अगर कोई आर्य वेदों की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए मैक्समूलर को इस रूप में उद्धृत करता है कि ''मैक्समूलर भी वेदों की प्राचीनता के प्रसंग में एक सत्य को अस्वीकार न कर सका, उसे भी ऋग्वेद को प्राचीनतम पुस्तक स्वीकार करना पड़ा।'' इस रूप में बात रखी जा सकती है।

जिज्ञासा-2. परमपिता परमात्मा ने वेदों का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में चार ऋषियों-अग्नि, आदित्य, वायु व अंगिरा को दिया था, किन्तु वेद में मन्त्र के समय (ऊपर) ऋषि छाप दिया जाता है, क्या कारण है? कृपया स्पष्ट करने की कृपा करें।

-कृष्ण गोपाल मेहरोत्रा आर्य, वार्ड नं० 1, रनकपुर (चम्पावत) उत्तराखण्ड

समाधान-वेदमन्त्र के साथ ऋषि दिया जाता है, वह क्यों? इसके उत्तर में महर्षि दयानन्द ने जो लिखा है, उसको यहाँ उद्धृत कर रहे हैं, उससे आपका समाधान हो जाएगा। ऋषि लिखते हैं, ''ईश्वर जिस समय आदि सृष्टि में वेदों का प्रकाश कर चुका, तभी से प्राचीन ऋषि लोग वेदमन्त्रों के अर्थों का विचार करने लगे। फिर उनमें से जिस-जिस मन्त्र का अर्थ, जिस-जिस ऋषि ने प्रकाशित किया, **उस-उस का नाम उसी मन्त्र के साथ स्मरण के लिए लिखा गया है।** इसी कारण से उनका ऋषि नाम भी हुआ है और जो उन्होंने ईश्वर के ध्यान और अनुग्रह से बड़े प्रयत्न के साथ वेदमन्त्रों के अर्थों को यथावत् जानकर सब मनुष्यों के लिए पूर्ण उपकार किया है, **इसलिए विद्वान् लोग वेदमन्त्रों के साथ उनका स्मरण रखते हैं।**'' ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प्रश्नोत्तर विषय:।

वेद मन्त्र के साथ ऋषि लिखने का उपरोक्त महर्षि की मान्यता के अनुसार यह अभिप्राय है कि इतिहास की दृष्टि से हमें ज्ञात रहे कि किन मन्त्रों, सूक्तों का अर्थ प्रथम बार किन ऋषियों ने प्रकाशित किया था। उसकी जानकारी के लिए मन्त्र के साथ ऋषि लिखा होता है।

क्रमश: अगले अंक में....

सच्चे मानव की तलाश

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

सिकन्दर जब भारत आया और एक फ़कीर से मिलने गया। सिकन्दर अपनी अकड़ में था। जीतता चला जा रहा था। कभी पराजित नहीं हुआ था। अब तक उसने कोई पराजय नहीं देखी और जानी थी। नैपोलियन को पराजय का मुंह देखना पड़ा था। सम्भवत: संसार में कोई ऐसा

व्यक्ति नहीं हुआ जिसने कभी हार न देखी हो, परन्तु सिकन्दर अकेला ऐसा व्यक्ति था जिसने पराजय का मुंह नहीं देखा था। तभी तो उसको महान् सिकन्दर कहा जाता है, परन्तु उस फकीर ने सिकन्दर को ऐसे देखा नीचे से ऊपर तक जैसे कोई पुलिस वाला किसी चोर को देखता है। सिकन्दर थोड़ा तिलमिलाया। सिकन्दर ने फकीर से कहा, ''ऐसे कैसे देखते हो? मैं हूँ महान् सिकन्दर।''

फकीर ने कहा, ''चुप! नासमझ। किस बात से तू महान् है?'' सिकन्दर ने कहा कि किस बात से! सारी दुनिया पर मैंने विजय प्राप्त कर ली है। फकीर ने कहा, ''एक बात सुन! मान लिया कि तू मरुस्थल में कहीं खो जाये, रास्ता भटक जाये, प्यास तुझे लगे और अपना यह लोटा जिसमें पानी हो, तुम्हारे समक्ष उपस्थित हो जाऊँ और तू गिड़गिड़ाये कि मुझे पानी दे दो और मैं कहूँ कि क्या देगा पानी के बदले में? बोल! कितना दे सकता है कि लोटे पानी के बदले में?''

सिकन्दर ने उत्तर दिया, ''यदि ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाये कि मरुस्थल में मैं बिना पानी के मर रहा हूँगा, प्यास से तड़प रहा हूँगा तो मैं उस प्यास की तीव्रता को शान्त करने के लिए आधा राज्य दे दूँगा।'' फकीर ने कहा, ''यदि आधे राज्य में मैं इस पानी के लोटे को न बेचना चाहूँ तो तुम क्या करोगे?'' राजा ने झट उत्तर दिया कि ''अत्यधिक विपरीत परिस्थिति हो जाने पर मैं अपना पूर्ण राज्य भी दे दूँगा।'' उस फकीर ने कहा, ''तो बस तेरी महानता का मूल्य हमें पता चल गया है। तेरे पूर्ण राज्य की कीमत मेरे एक पानी से भरे लोटे के बराबर है। एक पानी से भरे लोटे में मैं तेरे पूरे राज्य को खरीद सकता हूँ, परन्तु राजन्! सुनो, जब मृत्यु द्वार पर दस्तक देगी तब यदि तू मेरा राज्य भी दे देगा तो भी इस पूरे राज्य के बदले एक क्षण भी नहीं पा सकेगा।'' और हुआ भी यही। इतिहास इस बात का साक्षी है कि ''सिकन्दर जब भारत से वापिस अपने नगर की ओर लौट रहा था, मृत्यु ने अपने संकेत देने प्रारम्भ कर दिये। मृत्यु का समय इतना निकट आ चुका था कि वह अपने नगर तक पहुँच नहीं सकता था। मृत्यु के समय वह स्थान उसके नगर से इतनी दूर था कि कम से कम 24 घण्टे की यात्रा के पश्चात् ही पहुँच सकता था, परन्तु वह अपनी माँ के साथ प्रतिज्ञा करके आया था कि चाहे कुछ भी जाये परन्तु वह अपनी माँ के पास अवश्य आयेगा और अपने माँ के सम्मुख संसार की जीती हुई पूर्णरूपेण सम्पत्ति उसके चरणों में रख देगा। अपने मन्त्रियों एवं वैद्यों से उसने कहा कि जो चाहो ले लो परन्तु किसी प्रकार मुझे 24 घण्टे के लिए जीवित रख लो ताकि मैं माँ से की हुई प्रतिज्ञा पूरी कर सकूँ।'' वैद्यों ने कहा, ''राजन्! यह असम्भव है। अब कुछ भी नहीं हो सकता। अब कोई उपाय नहीं। हमारी कोई भी औषधि आपको 24 घण्टे भी नहीं बचा सकती।'' सिकन्दर हँसने लगा। वैद्यों ने पूछा, ''हँसते क्यों हो?'' सिकन्दर ने कहा, कुछ समय पूर्व एक फकीर से मैं मिला था। उसकी वह बात ''जब तेरी मृत्यु आयेगी तो यह पूर्ण राज्य के देने पर भी तुझे एक क्षण भी नहीं मिलेगा। मैंने उस फकीर की बात को अनसुना कर दिया था परन्तु आज उसकी बात सत्य सिद्ध हो रही है कि मैं अपना पूर्ण राज्य वैभव देकर भी 24 घण्टे के जीवन को क्रय नहीं कर सकता हूँ। यह जीवन पानी में गया। मैं तो केवल पानी पर ही रेखायें खींचता रहा। आज मुझे ज्ञात हो गया है कि मृत्यु राजा और फ़कीर किसी में भेद नहीं करती।''

इस दृष्टान्त से यह शिक्षा मिलती है कि संसार छोड़ो या न छोड़ो, अकड़ छूटनी चाहिये। कुछ लोग हैं, जो धन के कारण अकड़े हैं कि इतना हमारे पास धन है और कुछ इसलिए अकड़े हैं कि हमने इतना धन छोड़ा है परन्तु दोनों का कारण धन है। कुछ धन की अकड़ में हैं तो कुछ लोग ज्ञान की अकड़ में हैं। कोई कहता है कि मुझे वेद मौखिक कण्ठस्थ है, कोई गीता और कोई बाइबिल कण्ठस्थ करने की बात पर अकड़ में हैं। वे तो तोते हैं केवल। तोतों से

अधिक उनका कोई मूल्य नहीं। ये कण्ठस्थ करने का काम तो अब मशीनों ने कर लिया इसमें अकड़ने जैसा कुछ भी नहीं। तुम्हारा ज्ञान भी तुम्हारी मूढ़ता को भरने का कारण हो जायेगा। मानव का जन्म प्रातःकाल की तरह है। कितनी शताब्दियां व्यतीत हो गई। कितने-कितने जन्मों के पश्चात्, कितनी योनियों में भटकने के पश्चात् कितनी यात्राओं के पश्चात् यह दुर्लभ मानव चोला तुम्हें प्राप्त हुआ है। उसे क्या धन और ज्ञान की अकड़ में व्यतीत कर दोगे? और तुम अब भी सोये हुए हो, कब जागोगे? मनुष्य का जन्म तो तुमने पा लिया परन्तु अभी मनन नहीं उत्पन्न हुआ इसलिए तुम नाममात्र के मनुष्य हो। मनन तो तब होगा जब तुम मन के पार जाओगे। मन के भीतर जो छिपा है, उसकी खोज करो। मनातीत जो है, उसके अनुभव से ही तुम वस्तुतः मानवीय होते हो, नहीं तो नाममात्र के मनुष्य हो तुम! इस सम्बन्ध में एक दृष्टान्त प्रस्तुत है-

एक यूनानी फकीर था जिसका नाम डायोजनीज था। वह जीवन भर नंग-धडंग घूमता हुआ जीवन भर जलती हुई एक लालटेन लेकर घूमता रहा। जलती हुई लालटेन वह भी दिन में। लोग उसे देखकर बड़े आश्चर्य चकित रहते और पूछते, ''दिन में लालटेन क्यों लिए फिरते हो?'' डायोजनीज उत्तर देता, ''मैं मानव की तलाश कर रहा हूँ।'' लोगों ने पूछा, ''क्या बात है तुम्हें कोई मानव आज तक नहीं मिला?'' डायोजनीज कहता, ''मनुष्य का चोला पहने तो बहुत से पशु घूम रहे हैं परन्तु मुझे मानव कोई नहीं मिला। उसी की खोज में मैंने पूरा जीवन लगा दिया है।''

जब डायोजनीज मृत्यु के द्वार पर पहुंच चुका था। लालटेन जलती हुई उसके बगल में रखी थी। किसी ने पूछा, डायोजनीज! ''अब तो तुम मृत्यु के द्वार पर पहुँच चुके हो, कोई मानव मिला कि नहीं?'' डायोजनीज ने उत्तर दिया, ''मानव तो नहीं मिला परन्तु परमात्मा का धन्यवाद है कि मेरी लालटेन किसी ने नहीं चुराई, यही क्या कम है? अब तो इसी धन्यवाद के साथ मृत्यु का आंलिगन कर रहा हूँ कि बहुत कृपा की उन लोगों ने इस लालटेन को नहीं चुराया।'' हम तो केवल देखने मात्र के मानव हैं। किसी व्यक्ति से पूछते हैं कि ''भैया! क्या अपना जीवन इस प्रकार व्यतीत करोगे या कुछ साधना भी करोगे तो उत्तर देते हैं कि हाँ कल से प्रारम्भ करेंगे। परन्तु सोचो! कल कभी आता नहीं है? कल कभी आया है?'' सोचते रहते हैं-कल करेंगे ध्यान, आज तो अवकाश नहीं है। कल-कल करते जीवन व्यतीत हो जाता है, परन्तु हमारा कल नहीं आता।

मैं कई बार सोचता हूँ कि तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं को लोग मानते आये हैं, अब तो इस राष्ट्र की जनसंख्या 133 करोड़ हो गई है। अब तो कोई देवता दिखाई नहीं देता। अब तो शैतान और शैतानों के शिष्य ही दृष्टिगोचर होते हैं। हमने इस धरा को नरकमय बना दिया है। लोग सत्यनारायण की कथा करवाते रहते हैं-मुझे क्षमा करेंगे आप। उसमें न तो कोई सत्य है और न ही नारायण-सत्यनारायण की कथा। नाम भर सत्यनारायण की कथा है। बस लोग करवाते रहते हैं, पढ़ने वाले पढ़ते रहते हैं, सुनने वाले सुनते रहते हैं। न पढ़ने वालों के जीवन में कोई सत्य आता है और न ही सुनने वालों के जीवन में। न पढ़ने वालों का कोई अर्थ है और न ही सुनने वालों का। कैसी-कैसी झूठी बातें लोगों ने गढ़ रखी हैं। जैसे-

अजामिल नाम का पापी मर रहा था और अपने बेटे नारायण को बुलाया। पुराने युग में सभी नाम परमात्मा के होते थे। समय ने करवट बदली अब इस तरह के नाम रखना दकियानूसी लगता है। तो अजामिल के बेटे का नाम नारायण था। अजामिल था महापापी। उसने अपने बेटे को बुलाया परन्तु कथा यहाँ कहती है कि नारायण धोखे में आ गये। नारायण ने सोचा कि अजामिल मेरे नाम का स्मरण कर रहा है जबकि वास्तविकता यह थी कि वह बेटे को बुला रहा था। कथनानुसार अजामिल की मृत्यु हुई, सीधे स्वर्ग पहुँचे, क्योंकि मरते समय नारायण का नाम जो लिया था। जहाँ तक संभावना इस बात की है कि अजामिल ने अपने बेटे को इसलिए बुलाया होगा कि वह अपने जन्मभर के किये हुए पापों, डकैतियों, लूटों से जो धन जहाँ-जहाँ गड़ा हुआ था उसका पता अपने बेटे को बताये या किस प्रकार इन सभी कुकर्मों को करने की विधि बताना चाहता होगा। परन्तु अपने मुख से अजामिल ने नारायण का नाम क्या लिया कि ऊपर बैठा परमात्मा धोखे में आ गया। ये पाखण्डी लोग इन कथाओं के माध्यम से किस-किस प्रकार की कहानियाँ गढ़ लेते हैं और वे कहते हैं कि एक बार नारायण शब्द मुख से उच्चारित कर दिया तो जन्म-जन्म के पापों से मुक्ति मिल जायेगी और स्वर्ग की प्राप्ति हो जायेगी। समाज में इस प्रकार की कथाओं ने साधारण जनों में पाप,

शेष पृष्ठ 12 पर....

पावन-पावन दयानन्द

❑ इन्द्रजित्‌देव 9466123677

गतांक से आगे....

संसार में वैदिक दर्शन कुल छह ही हैं। इनमें कमियां, त्रुटियां तथा परस्पर विरोध है तो वेदों को छोड़कर हमारे पास दार्शनिकता के नाम पर शेष बचता ही क्या है? महर्षि

ने स्वयं इनका गहन स्वाध्याय किया व उन्हें इन शास्त्रों में परस्पर विरोधी सिद्धान्त नहीं मिले। परिणामतः वे इनके वकील बनकर आगे आये तथा डटकर इनका बचाव समर्थन किया। अपने ग्रन्थों में यत्र-तत्र महर्षि ने अपने कथन को सही सिद्ध करने हेतु इन दर्शनों के अनेकानेक प्रमाण देकर इनके प्रति अपनी गहन निष्ठा भी प्रकट की है। पावन दर्शनों पर लगे आरोपों के उत्तर देकर इनकी पावनता को पुनर्प्रतिष्ठित किया।

ऋषियों व उनके ग्रन्थों के प्रति महर्षि की निष्ठा का प्रमाण सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में उपलब्ध है– ''ऋषिप्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिए कि वे बड़े विद्वान्, सब शास्त्रविद् और धर्मात्मा थे।'' कपिल ऋषि को ऋषि दयानन्द से पूर्व बहुत से लोग उनके ग्रन्थ 'साख्यदर्शन' की कुछ सूत्रों की गलत व्याख्या के आधार पर अनीश्वरवादी कहते थे। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लगभग डेढ़ पृष्ठों में कपिल ऋषि के कुछ सूत्रों के आधार पर उनका बचाव करते हुए लिखा है–''इसलिए जो कोई कपिलाचार्य का अनीश्वरवादी कहता है, जानो वही अनीश्वरवादी है, कपिलाचार्य नहीं।'' पावन कपिलाचार्य व अन्यों के प्रति महर्षि की श्रद्धा व सत्यनिष्ठा कैसी पावन थी, इसका पता उनके इस कथन से मिलता है–''यदि मैं कपिल और कणाद के युग में पैदा हुआ होता तो उनके आश्रमों में मैं झाड़ू लगाने की योग्यता भी नहीं रखता।'' पावन को पावन सिद्ध करने वाले पावन दयानन्द की स्मृति को सादर प्रणाम!

महर्षि दयानन्द से पूर्व नारी की स्थिति बड़ी निन्दनीय तथा घृणित थी। किसी ने उसे पांव की जूती कहा था तो अन्य ने नरक का द्वार माना था। एक ने उसे पुरुषों की खेतियाँ कहा तो दूसरे ने विधवा होने पर पति के शव के साथ जल मरने की आज्ञा दी थी। नारी से ईश्वर प्रदत्त सभी अधिकार छीन लिए गए थे। न वह हवन कर सकती थी, न ही यज्ञोपवीत धारण कर पाती थी। पढ़ने के अवसर उसे प्रदान नहीं किये जा रहे थे तो युवतियों को वृद्धों के साथ ब्याह दिया जाता था। घरेलू, सामाजिक या राष्ट्रीय विषयों पर सोचने, बोलने व निर्णय करने का अधिकार भी छीन लिए गए थे। वह केवल बच्चे उत्पन्न करने वाली एक मशीन बनकर रह गई थी। बच्चे उत्पन्न करना, घरेलू कार्य करना व पति को परमेश्वर मानकर उसकी प्रत्येक इच्छा पूर्ण करना, यही उसका धर्म था, यही उसकी नियति थी। भ्रष्ट और अपावन स्थिति में जी रही नारी जाति को नरक से निकालने वाला कोई न था।

इस स्थिति में महर्षि ने महसूस किया कि नारी प्रायः स्वभाव से कोमल व हृदय से पुरुष की अपेक्षा अधिक पावन व करुणामयी होती है व समाज तथा राष्ट्र का पतन इसलिए हुआ है क्योंकि उसे अपावन स्थिति में रखकर ईश्वर प्रदत्त अधिकारों व पावन कर्त्तव्यों से वंचित कर दिया गया है। 'सत्यार्थप्रकाश' के द्वितीय समुल्लास में महर्षि ने लिखा–''जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम (व) उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसीलिए मातृमान् अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।'** धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या (सन्तान की) न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।'' महर्षि ने ये विचार महाभारत से उद्धृत किए–**'नास्ति मातृसमो गुरुः'** अर्थात् माता समान कोई गुरु नहीं है। नारी से जब पढ़ने का अधिकार ब्राह्मणों ने छीन रखा था, तो वह सन्तान को कैसे पढ़ा सकती थी? महर्षि ने पूर्व ब्राह्मणों ने कपोल कल्पना से यह श्रुति वाक्य प्रचारित करके स्त्रियों तथा शूद्रों से वेद तथा अन्य ग्रन्थ पढ़ने का अधिकार छीन रखा था–**'स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः।'** महर्षि ने यह भी पूछा कि 'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्', इस श्रौतसूत्र के होते तुम झूठे वाक्य बनाकर स्त्रियों से उसका वेदादि पढ़ने का अधिकार क्यों छीनते हो? इस सूत्र में स्पष्ट कहा है–'पत्नी यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े।' महर्षि ने यजुर्वेद के मंत्र 26/2

क्रमशः पृष्ठ 12 पर......

साम्प्रदायिकता से मुक्त हो भारत

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

जब से स्वतन्त्रता मिली तब से बाहर सीमाओं पर हमारे जवान शत्रु को धरती चटा रहे हैं। देश की रक्षा हेतु हम पूरी तरह से तैयार हैं, परन्तु समस्या देश के अन्दर है। एक तो राजनीतिज्ञों का स्तर देख ही रहे हैं। एक व्यक्ति अच्छा करने

की कोशिश करता है तो दूसरे लोग सत्ता हथियाने हेतु उसकी टांग खींचते हैं। राजनीति में अब सत्ता प्राप्त करने हेतु शत्रु से हाथ मिलाने में भी पीछे नहीं रहते। फलस्वरूप धरना, प्रदर्शन, तोड़-फोड़ करते हैं। राष्ट्रीय सम्पत्ति को क्षति पहुँचाने में संकोच तक नहीं करते, बाजार बन्द कराये जाते हैं। बसों, रेलगाड़ियों, कार्यालयों में कई बार आग लगा दी गई। लगता है देशद्रोही व गद्दार लोग आज भी हैं। जैसा कि पृथ्वीराज चौहान के समय जयचन्द था। महाराणा प्रताप के समय मानसिंह जैसे अकबर के साथ चले गए थे। आज भी हम राष्ट्र को समझ नहीं पाये हैं। आपस में लड़ना अच्छा काम नहीं, परन्तु कुर्सी के लिए राष्ट्र को भूल जाना अधिक भयानक कुकृत्य है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसा कोई प्रधानमंत्री होता तो आज जो पाकिस्तान में आतंकवाद फैला है, वह पाकिस्तान ही नहीं बनता क्योंकि बोस व श्रद्धानन्द ऐसे महान् व्यक्ति थे जो भारतीयों चाहे हिन्दू हों या मुसलमान सबके हृदय में बसे हुए थे। नेताजी सुभाषचन्द्र के लिए भारत का बच्चा-बच्चा जान देने को तैयार था, उनका नाम लेते ही लोगों की आँखों में प्यार भरे अश्रु छलक आते थे। आज भी पुराने स्वतन्त्रता सेनानियों से व आजाद हिंद फौज के सेनानियों से बात करने से पता चलता है कि कितना जज्बा था उनके हृदय में मात्र भूमि के लिए।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती भी ऐसे ही महान् क्रान्तिकारी योद्धा थे। हिन्दू-मुसलमान दोनों ही श्रद्धानन्द को चाहते थे। जो मुसलमान विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा हिन्दुओं से तलवार के बल पर मतान्तरित कराए गए थे स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि का ऐसा चक्र चलाया था कि मुसलमान हिन्दूधर्म में पुनः वापिस होने लगे थे और शुद्धि की आन्धी चल रही थी। यदि मुसलमान सभी अपने धर्म में वापिस आकर हिन्दू बन जाते तो पाकिस्तान की समस्या ही न होती, न पाकिस्तान बनता और आज न साम्प्रदायिक दंगे ही होते। शुद्धि अत्यन्त श्रेष्ठ कार्य था, आवश्यक भी था। मुसलमानों के पूर्वज भारत के हिन्दू ही तो थे तो फिर हिन्दू बनाने में क्या परेशानी थी। आज जो भारत में मारकाट हो रही है, वह न होती। शुद्धि शान्ति स्थापना का प्रमुख अस्त्र था। परन्तु उस महान् आत्मा स्वामी श्रद्धानन्द को षड्यन्त्र के तहत मार दिया गया। शुद्धि का कार्य अवरुद्ध प्रायः हो गया और साम्प्रदायिकता के बादल आज तक भारत पर मंडरा रहे हैं।

आज हमें ऐसे कुर्सी लोभियों से सावधान होने की आवश्यकता है। आपसी भेदभाव दूर कर जागरूक होने की आवश्यकता है। न ही हिन्दुओं को जातियों सवर्ण दलित ऊँच-नीच आदि जातियों में बांटने की चाल षड्यन्त्रों में आने की आवश्यकता है न ही मुसलमानों को आतंकवादियों के हाथों उनकी कठपुतली बनकर भड़काने वाली चालों में फँसने की आवश्यकता है। यहाँ हिन्दू-मुसलमान के पूर्वज एक ही रहे हैं और जो सिन्ध, अफगानिस्तान, पाकिस्तान चले गए, भारत से अलग हो गए, आज तक सुख-चैन से नहीं हैं। वहाँ तुर्क, मंगोल, पठान, शिया, सुन्नी, ईसाई, यहूदियों में लगातार खूनी खेल चल रहा है। इस्लाम लागू करने का भूत इस्लामियों की नींद खराब कर रहा है। इस्लामी देश स्वयं सुखी नहीं हैं। ईरान, इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, उत्तर-दक्षिण कोरिया, सीरिया, मिश्र, तुर्की आदि कौन सुखी हैं? सुखी वह है, जहाँ मानवता हो, श्रेष्ठता हो, पशु-पक्षी, जीव-वृक्ष, आकाश-पृथ्वी सब पर सुख की वर्षा हो, सबको जीने का अधिकार हो, ऐसा केवल आर्यधर्म में है, अन्यत्र कहीं भी नहीं। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'ओ३म् द्यौ शान्तिरन्तरिक्षमशान्ति...', 'ओ३म् विश्वानि देव...'** जैसी भावना व ईश्वर से प्रार्थना हो सभी के उपकार की भावना वेद में ही है। भारत में आज की कुटिल राजनीति ने सब व्यवस्था अस्त-व्यस्त की है। सत्ता के लिए देश को भी दांव पर लगाने वाले जयचन्द आज अवसर खोज रहे हैं, जबकि यह उचित नहीं। हम लड़ें-झगड़ें पर राष्ट्र व समाज की उन्नति के लिए एक व संगठित रहें, ऐसी हमारी भावना हो। विशेषतः हमें वैदिक धर्म के ध्वज के नीचे आना ही होगा।

हमने स्वतन्त्रता तो प्राप्त की, परन्तु अपनी भाषा व संस्कृति तथा प्राचीनतम उस शिक्षा की ओर नहीं देखा जिससे

भारत विश्व में गौरवशाली था व उन्नति के शिखर पर था। विदेशियों ने यहाँ आक्रमण क्यों किये? इसलिए ही तो किए कि यहाँ स्वर्णादि धन बहुत था, ज्ञान-विज्ञान के केन्द्र विद्यालय, आश्रम, गुरुकुल थे, उन्हें उन्होंने नष्ट किया। धन लूटकर ले गए और आक्रमण इसलिए किए कि हम जातिवाद, ऊँच-नीच में बंट गए थे। आपसी वैमनस्य बढ़ गए थे। विदेशियों ने इसका पूरा लाभ अर्जित किया।

आज हमें उस कमी (क्षति) को पूरा करना था उसमें सर्वप्रथम थी शिक्षा, यहाँ वैदिक शिक्षा। यहाँ वैदिक शिक्षा समस्त भारतवासियों के लिए होती। चाहे कोई भी हो, भारतीय सब संस्कृत पढ़ते। संस्कृत में हमारा स्वर्णिम इतिहास है, हमारा गौरव है, न हमने वैदिक शिक्षा की ओर ध्यान दिया, न संस्कृत की ओर। विदेशियों ने इन मूल कारणों की ही उपेक्षा की। हमारे शास्त्रों में मिलावट की और मैकाले की संस्कृति को महान् बताया। हम भी उधर ही चल पड़े। आज भारत भूमि पर काले अंग्रेजों की काली घटा उमड़ रही है।

देश स्वतन्त्र होने पर ऐसे लोगों को सत्ता नहीं देनी चाहिए थी जो मैकाले की विचारधारा के पूरक थे। डॉ. पट्टाभि सीतारमैया के अनुसार देश की स्वतन्त्रता हेतु भाग लेने वाले सर्वाधिक क्रान्तिकारी आर्यसमाजी ही थे परन्तु आजादी मिलने पर आर्यसमाज भी चुप रहा। सत्तासीन लोगों का ही समर्थन करता रहा। लाहौर आर्यसमाज का केन्द्र था। वह भी हमसे न बचाया गया। पहली बात तो हम सोच रहे थे कोई भी हो स्वदेशी हो, परन्तु यह गहराई से नहीं देखा सत्ता में सुभाष, पटेल, लालबहादुर, श्रद्धानन्द आदि महान् देशभक्त व सुधारकों के साथ षड्यन्त्र क्यों हुए? कहीं ऐसा तो नहीं सत्ता के लिए कोई खतरनाक खेल खेला गया हो जिसे अंग्रेज ही जानते थे या काले अंग्रेज जो भारतीय सत्तालोलुप थे। फलस्वरूप पाकिस्तान (पूर्वी-पश्चिमी) व हैदराबाद भारत की छाती पर बने और ऐसा बीज बोया गया जिससे भारत कभी चैन की सांस ही न ले सके वह बीज था साम्प्रदायिकता का, सवर्ण व दलितों में बांटने का, जेएनयू से उठती देशविरोधी आवाजों का, कश्मीर में अलगाववाद का, बंगाल में दंगे-फंसादों का, हिन्दू-मुसलमान का। आओ एक बार गहराई से सोचो अभी समय है देश को बचाना हमारा काम है। अब कोई भूल न हो जाए क्या करना है। यह मिल-बैठकर विचार करना होगा जिससे राष्ट्रीय एकता, अखण्डता बनी रहे। हमारे विचार संस्कार एक हों, हमारा धर्म एक हो, कोई मतभेद न रहे, ऐसा कोई रास्ता खोजें।

भजन

मेरे देवता के बराबर जहां में, कहीं देवता न कोई और होगा।
जमाने में होंगे बड़े लोग पैदा, दयानन्द सा न कोई और होगा। मेरे देवता....।
चरित्र हैं देखे बड़े ऊँचे-ऊँचे, नजरभर इधर भी जरा देख लेना,
चरित्र मिलेगा ऋषिवर का ऐसा, कि देखा सुना न कोई और होगा। मेरे देवता....।
इधर होगा सिर्फ ब्रह्मचारी अकेला, उधर हो विरोधी यह सारा जमाना,
विजय पाने वाला दयानन्द जैसा, न अब तक हुआ है न कोई और होगा। मेरे देवता....।
उठा के जमाने का इतिहास देखो, तो अपनों के लाखों हितैषी मिलेंगे,
अपने दुश्मन का भी हित चाहने वाला, ऋषि के सिवाय न कोई और होगा। मेरे देवता....।

तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी

**तुम्हें क्या बताएं दयानन्द क्या थे, वे शेरे वतन हिन्द के रहनुमा थे।
बताया कि बकवास है बुतपरस्ती, चलाती है दुनिया को फकत एक हस्ती।
तुम्हीं ने हमें एक बनना सिखाया, तुम्हीं ने हमें नेक बनना सिखाया।
मिटाया अविद्या का तुमने अन्धेरा, किया तुमने नव जागरण का सवेरा।
बताया कि है पाप सहना गुलामी, तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी॥
पत्थर की पूजा को झूठा बताया, निराकार ईश्वर का गुणगान गाया।
महिलाओं को वेद जिसने पढ़ाया, उन्हें हर दिशा में बराबर बढ़ाया।
छुआछूत के तम को जिसने मिटाया, सभी भूतप्रेतों को जिसने भगाया।
गौ का हमें जिसने गौरव बताया, हिन्द का फिर हिन्द में गीता गाया।
लिया जिसने वेदों का सच्चा सहारा, वो जीता सभी से किसी से न हारा।
विजय जिसने पंडों पे काशी में पाई, किया सिद्ध धोखा है पत्थर पुजाई।
ध्वजा हिन्द की जिसने हाथों में थामी, तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी॥
सन्ध्या हवन यज्ञ करना सिखाया, वेदों का जिसने हमें पथ सिखाया।
मजारों पे जाने से हमें जिसने रोका, ईसाइयत को कहा फकत यह है धोखा।
दयानन्द स्वामी अगर तुम न आते, तो मुमकिन है वेदों को हम भूल जाते।
मजारों पे जा-जा के हम सर पटकते, फकीरों के झांसों में आकर भटकते।
कभी जाके लिंगों पै पानी चढ़ाते, अविद्या अनाचार पल-पल बढ़ाते।
दयानन्द ऋषिवर अगर तुम न आते, तो मुमकिन है हिन्दू यहां बच न पाते।
नहीं हिन्द में हिन्दू पड़ते दिखाई, यहाँ फकत होते मुसलमान ईसाई।
तुम्हारी दया से मिली जिन्दगानी, वतन को मिली उसकी खोई जवानी।
वतन के लिए मरना जीना सिखाया, जहर भी मिले तो पीना सिखाया।**
फलक-ए-शहादत के जगमग सितारे, भगतसिंह, बिस्मिल और रोशन हमारे।
**फांसी के फन्दे में हंसकर जो झूले, शहादत को इनकी कोई कैसे भूले।
दयानन्द से इन्कलाब इनमें आया, गोरी हुकूमत का तख्ता गिराया।
निजामी दरिन्दों ने जब जुल्म ढाया, सभी मन्दिरों में था सन्नाटा छाया।
निजामी दरिन्दों की थी जुल्मी आदत, यहाँ भी हुई आर्यों की शहादत।
दरिन्दों के संग आर्यों की लड़ाई, यहाँ भी विजय आर्यों ने ही पाई।
नहीं टिक सके आर्यों पर निजामी, तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी॥**

**–सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक
आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)**

संघर्ष का दूसरा नाम—महात्मा अत्तरसिंह स्नेही

❑ डॉ. प्रमोद योगार्थी, प्राचार्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

पावक की लपटों में पड़कर, सोना कुन्दन बन जाता है।
भाव शुद्ध हो तो नन्हा धागा, रक्षाबन्धन बन जाता है।
संघर्षों की भट्ठी में तपना, कोई छोटी बात नहीं है।
त्याग-तपस्या से मानव माथे का, चन्दन बन जाता है॥

महात्मा अत्तरसिंह स्नेही का नाम इतिहास के पृष्ठों में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। संघर्ष तो हर व्यक्ति और हर परिवार किया करता है, परन्तु परहित के लिए किया गया संघर्ष इतिहास बन जाया करता है। महात्मा जी के जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा समाज व राष्ट्र के लिए व्यतीत हुआ। '**परोपकाराय सतां विभूतयः**' संतों का शरीर और जीवन परोपकार के लिए होता है।

महात्मा जी सीमित साधन वाले फक्कड़ महापुरुष थे। लेकिन सीमित साधन उनके कार्यों में बाधा नहीं बने। उन्होंने अपने मजबूत इरादों और संकल्प शक्ति के बल पर बड़े-बड़े कार्य किये। जो काम अच्छा लगा, तर्क और बुद्धि की कसौटी पर खरा उतरा, सिद्धान्तों के अनुकूल रहा, ऐसे कार्य को जब वे करने के लिए निकल पड़े, फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। चाहे वह शराबबन्दी आन्दोलन हो, चाहे गोरक्षा आन्दोलन हो या फिर सामाजिक बुराई पाखण्ड के खिलाफ आन्दोलन हो। कभी घबराए नहीं, कभी इतराए नहीं, कभी अभिमान नहीं किया और कभी स्वाभिमान नहीं छोड़ा। कभी झुके नहीं, कभी दबे नहीं और कभी रुके नहीं।

महात्मा जी का जन्म 13 अगस्त 1948 को माता परमेश्वरी देवी की कोख से गांव कंवारी जिला हिसार में हुआ। पिता चौ० सुधनसिंह जी दुहन सादा जीवन उच्च विचार वाले प्रतिभाशाली किसान थे। माता-पिता ने इनका नाम अत्तरसिंह रखा। आगे चलकर यही महानुभाव क्रान्तिकारी अत्तरसिंह आर्य और फिर वानप्रस्थत धारण कर महात्मा अत्तरसिंह स्नेही के नाम से प्रसिद्ध हुए। महात्मा अत्तरसिंह स्नेही पांच भाइयों में सबसे बड़े भाई थे। अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुनहरी देवी, बेटा श्री राजवीर सिंह, पुत्रवधु श्रीमती सराज आर्या, पौत्र युद्धवीर सिंह आर्य और पौत्री उर्मिल आर्या को छोड़कर गये हैं।

कुछ ऐसा लिखा जाए कि सदियों तक लोग पढ़ें या फिर कुछ ऐसा किया जाये जिस पर लोग बार-बार लिखते रहें। महात्मा जी में दोनों गुण थे। जब लिखने के लिए कलम उठाई तो छोटी-बड़ी 26 पुस्तकें लिख डालीं और जब कार्यक्षेत्र की बारी आई तब वहाँ भी उन्होंने अपने निजी व पारिवारिक कार्यों को छोड़कर सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज बुलन्द की। शराब जैसी सामाजिक व राष्ट्रीय बुराई को नष्ट करने के लिए महीनों-महीनों भूख हड़तालें की, धरने भी दिए, जेलों की भी यात्राएं कीं, अपने प्राणों की भी बाजी लगाई। मगर वे अपने मिशन में आगे बढ़ते रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज के प्रति उनके हृदय में गहरी आस्था और श्रद्धा थी। अपने उद्‌बोधन में दो विधि और एक निधि की चर्चा किया करते थे। विधि का मतलब संस्कार विधि और पंचमहायज्ञ विधि है और निधि का मतलब गोकरुणानिधि है। इन पुस्तकों को पढ़ने और तदनुकूल आचरण की प्रेरणा महात्मा जी दिया करते थे।

प्रेस-प्रवक्ता के रूप में भी महात्मा जी ने बेजोड़ काम किया। प्रेस-नोट बनाना उनके बायें हाथ का खेल था। समाचार-पत्रों में, आर्यजगत् की पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख, गतिविधियों की सूचनाएं प्रायः प्रकाशित होती रहती थी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सक्रिय पदाधिकारी, सदस्य तथा कार्यकर्त्ता के रूप में सेवा करते रहे। सभा के साप्ताहिक (अब पाक्षिक) पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' के प्रत्येक अंक में महात्मा जी का कोई न कोई लेख अथवा उनके द्वारा कोई न कोई समाचार अवश्य प्रकाशित होता था।

युवापीढ़ी के चारित्रिक विकास के लिए महात्मा जी ने अनेक प्रशंसनीय कार्य किये। तहसील, जिला तथा प्रान्तीय स्तर पर बड़े-बड़े आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन और संयोजन किया। इन शिविरों में हरयाणा के हजारों युवाओं ने चरित्र की शिक्षा प्राप्त की है।

विभिन्न सामाजिक संगठनों व आर्यसमाज की संस्थाओं

से जुड़े रहे। तन-मन-धन हर प्रकार से संस्थाओं की सेवा करते रहे। यद्यपि उनके पास कोई विशेष आमदनी का स्रोत नहीं था फिर भी वे अपने परिवार को, अपने मित्रमण्डली को दान के लिए प्रेरित करते रहे और एक-एक पैसा बचाकर स्वयं अपनी जेब से संस्थाओं में दान भी दिया करते थे। उनका एक वाक्य प्रसिद्ध है जिसे वे अपने उद्बोधन में बोला करते थे। बहुत ही मार्मिक और आर्य सिद्धान्तों को समेटे हुए है। वह दोहा इस प्रकार है-

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥

जीवन का अन्तिम भाग बहुत महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि वह जिन्दगी के तमाम अनुभव लिए होता है। जीवन के अन्तिम भाग का बहुत सारा समय महात्मा जी ने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के साथ व्यतीत किया। व्यक्तिगत रूप से मेरे ऊपर महात्मा जी का पूरा वरदहस्त रहा। महात्मा जी का जीवन दर्शन निश्छल, निष्कपट और सादगी से भरा हुआ था। मेरे साथ उनकी इतनी अंतरंगता थी कि हम दोनों में भाषा की, बिरादरी की, छोटे-बड़े की, गृहस्थी-वानप्रस्थी की कोई दीवार नहीं थी। वे प्रायः धर्म, आर्यसमाज, वेद, ऋषि दयानन्द, गुरुकुल, समाज-सुधार इत्यादि विषयों पर ही चर्चा किया करते थे। जीवन के अन्तिम वाक्य यदि किसी ने सुने तो वह मेरे ही कानों ने सुने। 12 मई, 2018 को मेरे साथ वार्तालाप करते-करते चिरनिद्रा की ओर प्रस्थान कर गये और 14 मई, 2018 को उन्होंने अपना यह नश्वर शरीर त्याग दिया।

महात्मा अत्तरसिंह स्नेही आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में उपदेशक के पद पर अनेक वर्ष रहे। इसके पश्चात् सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता, पुस्तकाध्यक्ष तथा वर्तमान में प्रतिष्ठित अन्तरंग सदस्य थे। जिला सिरसा, हिसार, फतेहाबाद में सभा के प्रत्येक कार्य में तन-मन-धन से मदद करते थे।

महात्मा जी के देशोपकारक कार्यों को देखकर अनेक संस्थाओं, संगठनों ने एक बार नहीं, दो बार नहीं, दस बार नहीं, अपितु पूरे 140 बार उनका अभिनन्दन किया है। अन्त में मैं उनके सम्पूर्ण जीवन के बारे में कहना चाहूँगा-

राह संघर्ष की जो चलता है, वही संसार को बदलता है।
जिसने रातों से जंग जीती, सूर्य बनकर वही निकलता है॥

भर्तृहरि के शब्दों में-

परिवर्तिनि खलु संसारे, मृतो को वा न जायते।
स जातो येन जातेन, याति वंशः समुन्नतिम्॥

अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में किसका जन्म नहीं होता और किसकी मृत्यु नहीं होती। परन्तु उसका जन्म सार्थक माना जाता है जिसके जन्मने से परिवार, समाज, राष्ट्र का नाम रोशन होता है। ऐसे परोपकारी महापुरुष महात्मा अत्तरसिंह स्नेही थे। आर्यजगत् में शोक की लहर है, जो भी सुनता है, आंखें नम हो जाती हैं। हम ऐसे महापुरुष को शत-शत वन्दन करते हैं, अभिनन्दन करते हैं और श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

आर्य वीर दल हरयाणा द्वारा आयोजित ग्रीष्म-कालीन चरित्र निर्माण शिविर

आर्य वीर शिविर

1.	आर्यसमाज गुजरानी (भिवानी)	21 मई से 27 मई
2.	आर्य सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल सिरसा	23 मई से 30 मई
3.	आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत	24 मई से 30 मई
4.	खादी आश्रम पानीपत	30 मई से 03 जून
5.	आर्यसमाज बाढ़ड़ा जिला भिवानी	02 जून से 10 जून
6.	आर्य पब्लिक स्कूल गुड़गांव	03 जून से 10 जून
7.	दयानन्दमठ रोहतक (प्रान्तीय शिविर)	03 जून से 10 जून
8.	डीएवी स्कूल, सैक्टर-15 सोनीपत	03 जून से 10 जून
9.	गुरुकुल जूआँ (सोनीपत)	03 जून से 10 जून
10.	रा०प्रा० पाठशाला जलियावास (रेवाड़ी)	03 जून से 10 जून
11.	डीएवी स्कूल करनाल	03 जून से 10 जून
12.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	01 जून से 05 जून
13.	गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (राष्ट्रीय शिविर)	11 जून से 17 जून
14.	रा०व० मा० विद्यालय माजरा [भालखी] (रेवाड़ी)	11 जून से 17 जून
15.	सीआर मैमोरियल स्कूल रोझूवास (रेवाड़ी)	11 जून से 17 जून
16.	न्यू ईरा पब्लिक स्कूल गुडियानी [कोसली] (रेवाड़ी)	11 से 17 जून
17.	दयानन्द स्कूल फिरोजपुर झिरका (मेवात)	18 जून से 25 जून
18.	गुरुकुल झज्जर	18 जून से 25 जून
19.	रा०व०मा० विद्यालय बाढड़ा (भिवानी)	02 जून से 09 जून
20.	आर्य विद्या मन्दिर व० मा० वि० सै०-7, गुरुग्राम	03 जून से 10 जून
21.	आर्यसमाज मन्दिर नई सब्जीमण्डी (रेवाड़ी)	25 जून से 17 जुलाई
22.	महर्षि दयानन्द सी.सै. स्कूल, ग्राम माकडौला (गुरुग्राम)	27 मई से 03 जून

आर्य वीरांगना शिविर

1.	गुरुकुल जूआँ (सोनीपत)	28 मई से 02 जून
2.	आर्यसमाज मॉडल टाउन (गुरुग्राम)	02 जून से 10 जून
3.	खादी आश्रम पानीपत	30 मई से 03 जून
4.	थारूराम आर्य कन्या विद्यालय फरीदाबाद	03 जून से 10 जून
5.	वैदिक भक्ति आश्रम आर्यनगर रोहतक	11 जून से 17 जून
6.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	07 से 11 जून

प्रत्येक जिलों में अन्य शिविरों की योजना बनाई जा रही है जिसकी सूचना आगामी अंक में दी जाएगी। -**वेदप्रकाश आर्य**, मंत्री आर्य वीर दल हरयाणा

जोशीला वीर शहीद कर्तारसिंह

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

''जिंदगी जिंदादिली का नाम है 'रोशन' मुर्दादिल क्या खाक़ जिया करते हैं।'' जिंदगी का यह तराना पढ़ने व जीने वाले ठाकुर रोशनसिंह व सरदार भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारियों से लगभग डेढ़ दशक पहले मात्र 20 वर्ष की आयु में देश की आजादी के लिए फांसी का फन्दा चूमने वाले शहीद कर्तारसिंह नवयुवकों की धमनियों में बहने वाले खून को गरम कर गए, साथ ही अंग्रेजों को सबक दे गए कि दुनिया को जीना सिखाने वाले भारतीयों को कोई गुलाम नहीं रख सकता।

इस जोशीले नवयुवक ने अमेरिका में जाकर यह अनुभव किया कि गुलामी का अपमान पहचान के साथ ही जुड़ जाता है। या तो व्यक्ति अपनी पहचान खो दे या गुलामी के कलंक को धो दे। सच्ची और गौरवपूर्ण पहचान को खोना आत्महनन है। वीर, जोशीले व्यक्ति कभी आत्महत्यारे नहीं हो सकते। जब नवयुवक ने देखा कि विदेशों में भी भारतीयों को कुली, दास समझा जाता है, तो वीर का जोश उमंग भरने लगा। पंजाब लौटकर संगठन की सोचने पर मार्गदर्शन के लिए इनकी नजर सबसे पहले भाई परमानन्द पर पड़ी। इस घटना से भी सिद्ध होता है कि आर्यसमाज आजादी के आन्दोलन में सर्वाधिक सक्रिय संस्था थी। धन्य दयानन्द! 'धर्म' को आडंबर, अंधविश्वास, बाह्य कर्मकाण्ड के चंगुल व दायरे से बाहर निकालकर 'स्वतन्त्रता' जैसे व्यापक विषयों से जोड़कर उसके वास्तविक स्वरूप को प्रकाशित कर गए। भाई परमानन्द जैसे दार्शनिक व चिंतक से मिलकर निश्चित ही इनके जोश को योजना का सहारा मिला। वर्षों पहले हरयाणा शिक्षा बोर्ड की अंग्रेजी पुस्तक में भाई परमानन्द का अंडेमान कारावास के बारे में जो संस्मरण पाठ रूप में था, उसमें भाई जी ने कर्तारसिंह, पिंगले, हरनामसिंह के जोश की चर्चा की है। ज्ञात रहे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द का हरयाणा से विशेष लगाव रहा। हरयाणा में पिछले दिनों से जो जातिवाद का विष बोया गया, आर्यसमाज विरोधी ताकतों ने जो इसका लाभ उठाना चाहा, प्रत्येक आर्ययुवक का कर्त्तव्य बनता है कि इस साजिश का भण्डाफोड़ करके अपने गौरव को बनाए रखें।

बात कर रहे थे शहीद कर्तारसिंह की। वीर नवयुवक ने संगठन बनाया। रासबिहारी बोस ने सूचना प्राप्त होने पर स्वयं शचीन्द्रनाथ सान्याल को इनके पास भेजा। हथियार एकत्रित किए गए, शक्तिशाली बमों का प्रबन्ध किया गया। छावनियों में सैनिकों को विद्रोह के लिए तैयार किया गया। साइकिल पर घूम-घूमकर 19 वर्ष के नवयुवक ने ग्राम-ग्राम जाकर लोगों को आजादी के लिए प्रेरित किया।

रासबिहारी बोस स्वयं भी पंजाब आए। विप्लव की तिथि निश्चित की गई। भेद खुलने पर बदलाव भी किया गया। लेकिन फिर से भेद खुल गया। अनेक साथी पकड़े गए। पुलिस के चंगुल से बचने पर भी नवयुवक ने भारत के बाहर कहीं भाग जाने का विचार त्याग दिया। अपने साथियों को छुड़ाने व फिर से तैयारी का निश्चय किया। आखिरकार पकड़े गए। जज द्वारा सहानुभूति दिखाने पर भी **'अदीनाः स्याम शरदः शतम्'** का आदर्श अपनाए रखा। जज को यही संदेश दिया कि पुनर्जन्म लेकर फिर से स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करना चाहता हूँ। यदि भगवान् ने स्त्री का जन्म दिया तो अपनी कोख से अपने जैसे पुत्र को जन्म दूँगा जो यह संघर्ष करेगा। यह वीर चरित्रवान् ब्रह्मचारी था। एक डाके के दौरान जब एक साथी ने एक नवयुवती से कुचेष्टा करनी चाही तो इन्होंने अपनी पिस्तौल उसकी कनपटी पर रख दी। नवयुवती व उसकी माँ के पैर पकड़वाकर माफी मंगवाई व उनके माफ करने पर ही उसे जीवित छोड़ा।

हे परमात्मा! मेरे देश के नवयुवकों की बुद्धि, बल ऐसा ही, इन वीरों जैसा बना दो, जिससे कि वे जातिवाद, अलगाववाद, सम्प्रदायवाद, पाखंड, भ्रष्टाचार, अनैतिकता से लड़कर सत्य धर्म की स्थापना कर सकें। जन्म दिवस 24 मई (1896) पर इस वीर को हमारा कोटि-कोटि प्रणाम। आज के नवयुवक **'बागी'** का अर्थ किसी फिल्मी नायक के रूप में लेते हैं, जो किसी लड़की के प्रेम में परिवार, समाज से **'बागी'** हो गया। फांसी के समय कर्तारसिंह ने कहा था कि **''भविष्य में बागी कर्तारसिंह कहकर मेरा परिचय दिया जाए।''** आज के नवयुवकों को चाहिए कि ऐसे बागियों का परिचय प्राप्त करें व कराएं, फिल्मी **'बागियों'** से दूर रहें।

सच्चे मानव की तलाश...... पृष्ठ 5 का शेष.......

भ्रष्टाचार, दुराचार की भावनाओं को जन्म दिया है। वे पाखण्डी लोग इस प्रकार प्रचार करते हैं कि प्रभु पतितपावन है, पतितों को क्षमा कर देगा, वह महाकरुणावान् है, अपने करुणा की अमृत वर्षा एक बार उसका नाम लेने से ही कर देगा। परन्तु वे इस वैदिक सिद्धान्त को भूल जाते हैं–

''**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**'' किये हुए कर्मों का फल अवश्य भुगतना पड़ेगा। कोई और इसके फल का भागी नहीं बन सकता। इसलिए तो डायोजनीज दिन में भी लालटेन जलाकर मानव की खोज में लगा था। तभी तो वेद का ऋषि लिखता है–

'**मनुर्भव**' मनुष्य बन। ऋषि दयानन्द जी ने मानव उसे बताया है जो मननशील हो। प्रत्येक कर्म को विचार कर करे। पढ़े हुए और सुने हुए वैदिक सिद्धान्तों को आचरण में लाये। जिस दिन ऐसा सम्भव होगा हम सब की '**सच्चे मानव की तलाश**' पूर्ण हो जायेगी।

प्रेरक वचन

- **जो चीजें कष्ट पहुंचाती हैं, वही सिखाती हैं।**
- **हम खुश होने के कारण नहीं हंसते बल्कि हंसने के कारण खुश होते हैं।**
- **सुन्दरता बढ़ाने के लिए खुशी जैसा कोई प्रसाधन नहीं है।**
- **इंसान के भाग्य का संचार मुख्यतः उसी के हाथ में होता है।**
- **इंसान अपने बारे में जैसी कल्पना करता है, वैसा बन जाता है।**
- **कमजोरों के खिलाफ क्रोध गलत है, बलवानों के खिलाफ व्यर्थ।**
- **सुख वस्तुओं में नहीं होता, सुख तो हमारे अन्दर होता है।**
- **सफलता का रहस्य हैं, उद्देश्य के प्रति लगन।**
- **क्रोध से शुरू होने वाली हर बात, लज्जा पर खत्म होती है।**
- **जीवन की सुन्दरता इस बात में है कि कितने लोग हमसे खुश रहते हैं।**
- **शतरंज की तरह जीवन में दूरदर्शिता की ही विजय होती है। –भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)**

पावन-पावन दयानन्द..... पृष्ठ 6 का शेष.......

का भी प्रमाण देकर सिद्ध किया कि स्त्री व शूद्र को भी वेद पढ़ने का अधिकार है–

यथेमाँ वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥

महर्षि ने मनु के इस सिद्धान्त का भी समर्थन किया कि दश उपाध्याय एक आचार्य के बराबर, सौ आचार्य एक पिता समान तथा एक सहस्र पिता एक माता के तुल्य हैं। इसके अतिरिक्त 'पंचायतन पूजा' के अन्तर्गत सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में यह क्रान्तिकारी विचार भी प्रस्तुत किया कि स्त्री के लिये पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूजनीय है। चित्तौड़ में एक बार चलते हुए महर्षि ने गली में खेल रही एक कन्या को देखा तो उसके आगे अपना शीश झुका दिया था। नारी को सिर का मुकुट माना। यह संक्षिप्त विवरण पर्याप्त है। अतीत में नारी को बहुत उच्च आदर, अधिकार व पावनता प्राप्त थी तथा मध्यकाल में सब चौपट हो गया था। महर्षि ने गहन अध्ययन व ठोस प्रमाणों के आधार पर क्रान्ति लाकर नारी को पुनः पावन, पवित्र व वाञ्छनीय स्थान दिलाया। ऐसे क्रान्तिकारी सुधारक दयानन्द के प्रति समाज को चिर ऋणी रहना होगा।

संपर्क-चूना भट्ठियाँ, सिटी सैन्टर के निकट, यमुनानगर

बेटी ज्योति ने बारहवीं कक्षा में भी किया टॉप

रोहतक। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक में लिपिक पद पर कार्यरत श्री रघुवरदत्त जी की सुपुत्री ज्योति ने हरियाणा शिक्षा बोर्ड द्वारा जारी किए गए बारहवीं कक्षा में 92 प्रतिशत अंक लेकर अपने स्कूल में कॉमर्स संकाय में टॉप किया है। इनके पिता जी ने बताया कि बेटी ज्योति ने ट्यूशन और कोचिंग के बगैर सेल्फ स्टडी से सर्वाधिक अंक प्राप्त कर उसने हमारा व स्कूल का नाम रोशन कर इतिहास रचा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी, सदस्य, कार्यकर्त्ता एवं कर्मचारी बेटी ज्योति सुपुत्री श्री रघुवरदत्त सभा-लिपिक को हार्दिक बधाई देते हैं।

–सम्पादक

समाचार-प्रभाग

वेदप्रचार मण्डल गुरुग्राम द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम

जिला वेदप्रचार मण्डल गुरुग्राम ने 8 अप्रैल 2018 से 24 अप्रैल 2018 तक 17 दिनों में 38 कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया है। ईश्वर कृपा से ये आयोजन केवल सफल ही नहीं हुए अपितु इन प्रोग्रामों को देख व सुनकर विद्यार्थियों व ग्रामीण वासियों में आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द, आर्य प्रतिनिधि सभा और वैदिक धर्म के प्रति आस्था का मानो पुनर्जागरण हुआ है। सरकारी स्कूलों चाहे वे हाई व सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल हों, उन सब पर एक छाप पड़ी है। स्कूलों के अध्यापक गण व प्राचार्य इतने अभिभूत हुए कि वे हमें निवेदन कर रहे हैं कि इस प्रकार के प्रोग्राम प्रत्येक मास हमारे स्कूलों में किए जाएं। कई महिला प्रधानाचार्यों ने तो हरेक शनिवार को हमें बुलाने का न्यौता तक दे दिया है।

मैं यहाँ पर यह भी बताना जरूरी समझता हूँ कि जिला गुरुग्राम के इतिहास में इतना लम्बा, सफल और आकर्षक कार्यक्रम पहली बार हुआ है। इनमें 17 गांव व 17 स्कूल शामिल हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे आने वाले समय में ग्रामीण आंचल में हम आर्यसमाज की स्थापना करने में कामयाब होंगे। रात्रि के कार्यक्रम जो ग्रामीण इलाकों में हुए उनमें उपस्थिति बहुत अच्छी रही। स्कूलों में पूरे छात्र-छात्राएं एवं पूरा स्कूल स्टाफ उपस्थित रहता था। सभा द्वारा भेजे गए 'वेदप्रचार रथ' की लोगों ने खूब तारीफ की।

मण्डल के मेरे सहयोगी विशेषकर मण्डल के संरक्षक व उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा माननीय श्री कन्हैयालाल आर्य, मंत्री श्री जोगिन्द्र सिंह, उपमंत्री श्री तिलकराज आर्य, श्री नरवीरलाल चौधरी, श्री वेदभानु आर्य, व०उपप्रधान श्री वी.पी. सिंह, श्री भगत सिंह, श्री राजेन्द्र बल्हारा, बहन उषा आर्या, श्रीमती लक्ष्मी जी, श्री पार्थसिंह चौहान पूर्व प्रधानाचार्य, श्री वेद आर्य व सत्यप्रकाश सैनी आदि का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

—के.सी. सैनी, प्रधान

गृह प्रवेश पर वैदिक कार्यक्रम

दिनांक 30 अप्रैल 2018 को तिलक नगर रोहतक में श्री राजेश आर्य सुपुत्र श्री शमशेरसिंह ग्रेवाल के नवनिर्मित भवन के गृहप्रवेश के शुभ अवसर पर यज्ञ का आयोजन आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक द्वारा किया गया। डॉ. जगदेव सिंह यज्ञ के ब्रह्मा तथा सहयोगी श्री सुभाष आर्य एवं श्री कंवरसिंह आर्य ने देवयज्ञ करवाया। इस सारी व्यवस्था में सहयोग रहा श्री बलराज आर्य और श्री अनूपसिंह का जिससे सैकड़ों नर-नारी और बच्चे यज्ञ पर आराम से बैठे और प्रसन्नता से सबने यज्ञ में भाग लिया। यज्ञोपरान्त डॉ. जगदेवसिंह ने पांच महायज्ञों की बड़े सुन्दर ढंग से व्याख्या की और बताया कि इन यज्ञों के करने से ही मकान घर बनते हैं और जहाँ यज्ञ नहीं होता वहाँ शुद्धता और पवित्र आचरण के बिना घर नहीं रहते। श्री सुभाष आर्य ने सबसे निवेदन किया कि वैदिक परम्पराओं को बनाए रखने के लिए वैदिक मान्यताओं को अपने जीवन में लागू करना चाहिए अन्यथा विधर्मी अपना जाल फैलाये बैठे हैं। इस अवसर पर विशेष अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कर्मठ प्रधान मा० रामपाल जी और उनके साथ आर्य सभा के प्रतिष्ठित वकील श्री नरेन्द्र कटारिया का तालियों से स्वागत किया गया। प्रधान जी ने इस अवसर पर राजेश जी और उनके पूरे परिवार को बधाई दी और अपनी शुभ कामनाओं को प्रकट करते हुए कहा कि इस घर में यह परिवार खुशियों से और सम्पन्नता के साथ यज्ञमय जीवन बिताए। शान्तिपाठ के बाद सभी को यज्ञ प्रसाद तथा प्रीतिभोज दिया गया।

—सुभाष सांगवान, प्रधान,
जिला वेदप्रचार मण्डल, रोहतक

आर्यसमाज जीन्द जंक्शन का चुनाव

प्रधान-मा० सतवीर सिंह, मन्त्री-मा० पृथ्वीसिंह मोर, कोषाध्यक्ष-श्री महासिंह नैन।

—मा० पृथ्वीसिंह मोर, मन्त्री आर्यसमाज जीन्द जंक्शन।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. वेदप्रचार मण्डल (पलवल)	1 से 31 मई 2018
2. आर्यसमाज जाडरा (रेवाड़ी)	2 से 3 जून 2018
4. आर्यसमाज बिसोहा (रेवाड़ी)	9 से 10 जून 2018

—रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

सम्पादक के नाम पत्र

मान्यवर,

आपके सम्पादकत्व में प्रकाशित पत्रिका '**आर्य प्रतिनिधि**' अप्रैल 2018 का प्रथम अंक प्राप्त हुआ। ईश-भक्ति के माध्यम से राष्ट्र-भक्ति और राष्ट्र-भक्ति के माध्यम से उदात्त जीवन-मूल्यों की रक्षा करना ही ऐसी विरल पत्रिकाओं का लक्ष्य होना चाहिए और '**आर्य प्रतिनिधि**' पत्रिका निश्चिय ही ऐसे ही महान् उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समर्पित है। आज देश विकट स्थिति से गुजर रहा है। एक ओर बाह्य शत्रु हमारी सीमाओं को निरन्तर आक्रान्त कर रहा है, वहीं दूसरी ओर बाह्यदर्शन से प्रभावित विकृत मानसिकता से युक्त कुछ स्वयंभू-दम्भी चिन्तक घुन की तरह से देश को खोखला कर रहे हैं। श्रेष्ठ पत्रिकाओं ने, जो उदात्त राष्ट्रीय भावना से परिपूरित थीं, अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह का आह्वान किया था। हमें उन पत्रिकाओं का और उनके संचालकों का ऋणी होना चाहिए। आज भी '**आर्य प्रतिनिधि**' जैसी पत्रिकाएँ देश की अखण्डता, आस्तिकता, सनातन मानव-मूल्यों की रक्षा में पूर्ण आत्मोसर्ग की भावना के साथ समर्पित हैं। निश्चय ही ऐसी पत्रिकाओं के महत्त्व को अब अंगीकार करने की आवश्यकता है, जिससे कि भारतवर्ष की अखण्डता की रक्षा किया जा सके अन्यथा '**भारत तेरे टुकड़े होंगे**' कहने वाले अपने नापाक, कुत्सित उद्देश्यों में सफल हो जायेंगे।

–चौहान संजीव कुमार, प्रोफेसर हिन्दी विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।
निवास-स्थल–क्षत्रिय सदन, 55, सैक्टर-1,
रोहतक, हरयाणा मो० 9255150400

श्रीमती सावित्री देवी जी दिवंगत

वेदप्रचार मण्डल जिला गुरुग्राम के प्रधान श्री के.सी. सैनी जी की धर्मपत्नी, माता श्रीमती सावित्री देवी का हृदय गति रुकने से 26.04.2018 को निधन हो गया। उनकी आयु 72 वर्ष थी। माता जी अपने पीछे बड़ा परिवार छोड़कर गई हैं जिसमें तीन सुपुत्र, एक सुपुत्र, तीन पुत्रवधू, तीन पोते और तीन पोतियां शामिल हैं। दो नाती बेटी व दामाद हैं। वैभवशाली परिवार है। माता जी का जीवन सदैव खुशियों से भरपूर रहा। उनका जन्म गाजियाबाद के एक वैदिक व धनी किसान परिवार में हुआ। सारी शिक्षा गाजियाबाद में प्राप्त की। माता जी एक सच्ची ईश्वरभक्त थी। यज्ञप्रेमी थी। नित्यप्रति यज्ञ करती थी। अपने पतिदेव को कई बार कह देती थी कि आपने आज यज्ञ नहीं किया तो भोजन भी मत करना। उनके निवास पर 27.4.18 से 6.5.18 तक निरन्तर शान्तियज्ञ चलता रहा।

6.5.18 को उनकी प्रेरणा सभा में जो आर्यसमाज, न्यू कालोनी, गुरुग्राम में हुई उसमें सभाप्रधान माननीय मास्टर रामपाल जी व सभा वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री रमेश आर्य शामिल हुए। हम सब मण्डल अधिकारी, सदस्यगण व सभी गुरुग्राम की आर्यसमाजें उनकी आत्मा की सद्गति की प्रभु से प्रार्थना करते हैं। **–वेदभानु आर्य, महामन्त्री**

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जगाधरी का वर्ष 2017-2018 का परिणाम सर्वोत्तम रहा

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जगाधरी (यमुनानगर) का वर्ष 2017-2018 का 10वीं व 12वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम सर्वोत्तम रहा। सर्वोत्तम परिणाम होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सभी होनहार विद्यार्थियों, मेहनती अध्यापकगण व स्थानीय प्रबन्ध समिति को बधाई देती है। आशा करती है कि भविष्य में भी परीक्षा परिणाम इसी प्रकार सर्वोत्तम रहे।

परीक्षा परिणाम का विवरण

(1) 10वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम 90% रहा। जिसमें 16 छात्राओं ने मैरिट में स्थान प्राप्त किया। 23 छात्राओं ने प्रथम श्रेणी और 2 छात्राओं ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त किया। बेटी कुमारी नैना ने 88% अंक प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया।

(2) 12वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम 95% रहा, जिसमें 8 छात्राओं ने मैरिट में स्थान प्राप्त किया। 13 छात्राओं ने प्रथम श्रेणी और 17 छात्राओं ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त किया।

नोट–कामर्स संकाय में पलक ने 84% व कला संकाय में भारती ने 85% अंक प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया। **–उमेद शर्मा, सभामन्त्री**

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की टीम ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के जीरो बजट प्राकृतिक कृषि फार्म का अवलोकन किया

कुरुक्षेत्र, 21 मई 2018। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के ज्वाइंट सेकेट्री पवन कुमार ठाकुर (आई.ए.एस.) ने अपनी कृषि विशेषज्ञों की टीम के साथ गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि फार्म' का दौरा किया और महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा चलाए जा रहे 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' अभियान की खूब प्रशंसा की। टीम में अतिरिक्त ज्वाइंट डायरेक्टर डॉ. रमेश चन्द, प्रान्तीय निदेशक डॉ. लाभ सिंह सहित अन्य कृषि विशेषज्ञ शामिल रहे जिन्हें गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी व सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने स्वयं कृषि फार्म, जीवामृत, घनजीवामृत निर्माण केन्द्र तथा गुरुकुल की अत्याधुनिक गोशाला का अवलोकन कराया। गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने बताया कि कृषि मंत्रालय के अधिकारियों ने फार्म का दौरा करने के उपरान्त वहाँ पर मौजूद गन्ने व सब्जियों की फसल की गुणवत्ता की खूब सराहना की। ज्वाइंट सेकेट्री पवन कुमार ठाकुर ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य के चलते पीएम ऑफिस के निर्देश पर वे गुरुकुल के कृषि फार्म पर आए। यहाँ आकर और बिना खाद, डीएपी व दवाइयों के केवल देशी गाय के गोबर और गोमूत्र के प्रयोग से लहलहाती फसलों को देखकर उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया है कि यदि देश के किसानों को कर्ज के बोझ से बचना है और अपनी बंजर होती जमीन को जहरीली होने से बचाना है तो उन्हें महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' मॉडल को अपनाना होगा। इससे पूर्व गुरुकुल पहुंचने पर कृषि मंत्रालय की टीम को गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, कृषि अधिकारी गुरदीप सिंह, मुख्य लेखाधिकारी सतपाल सिंह ने फूल मालाओं से स्वागत किया।

भजन तर्ज देशी

टेक–नित नई बीमारी पालैं वैं नर-नारी जिनकी जीभ चटोरी रहैं सारी हाणा।
जी चाहवै जब भौं किम्मे खाले यू ताशीर गात की नहीं जाणा॥

1. पांच तत्त्वों से तन बणैं पांच-पांच कर्म-ज्ञान इन्द्री।
दो सौ छह हड्डी देही में अष्टधातु जिन्हें बिन्द्री।
बहत्तर बार धड़कै दिल एक मिन्ट में 98.4 सेंटीग्रेड ताप जिन्द्री।
भाजन से रस-रक्त-मांस-मेद-अस्थि-मज्जा से वीर्य गुन्द्री।
हरेक में पांच-पांच दिन लगैं बनण मैं जै टेम पै हो पीणा-खाणा।
जी चाहवै जब भौं किम्मे ....॥

2. शरीर का वैद्य शरीर है न्यू आयुर्वेद लिखता है।
जब शरीर के बसका रोग रहै ना फेर घणी न दिखता है।
वात-कफ-पित्त तीन रोग हैं जिन्हें हरड़-बहेड़ा-आंवला ठीक रखता है।
इस त्रिदोष की परख करो जो त्रिफले से डिगता है।
फेर वात-पित्त-कफ बराबर हों निरोग-त्रिदेव रहें जां नाड़ी से पहचाणा।
जी चाहवै जब भौं किम्मे ....॥

3. इगला-पिगला-सुषुम्णा मुख्य नाड़ी हों पांच प्राण रुद्र ग्यारा।
मुख मण्डल देखै-सुणै-वाणी-व्यंजन दे मुखिया मस्तक गुण-ज्ञान सारा।
ऐड़ी-चोटी-गुदा-पेडू तक नस-नाड़ी तंत्र नाभि में कै जारा।
इस रचना में अति भेद हैं अद्‌भुत रंग नक्शा न्यारा।
रज-तम तज सतगुण चाहिए सात्त्विक भोजन अपनाणा।
जी चाहवै जब भौं किम्मे ....॥

4. ब्रह्म मुहूर्त में उठ सवेरे यज्ञ-योग लग्न ब्रह्मचर्य चाहिए।
रात जगै ना दिन में सोवै आलस तज कै नहाइए।
सुबह 8 से 10 बजे तक खाणा शाम 6 से 8 बजे तक खाइए।
भोजन से एक-एक घण्टा पहले-पाछै पानी पी-प्याइए।
दही-मक्खन-बेर-बदाम प्रातः खावै शाम न घी-दूध-तिल-मखाणा।
जी चाहवै जब भौं किम्मे ....॥

5. धूम्रपान नशा विषा कभी लेणा नहीं हाथ में।
दूध या दूध से बणी चीज संग खटाई खाणा नहीं साथ में।
फास्ट-फूड अडंग-बडंग खाण-पीण तैं बीमारी बणैं गात में।
नित 10 बजे से 4 बजे तक छह घण्टे सोवै गहरी नींद रात में।
फेर उसकै बीमारी के मांगै जिसकै खटक लगै ज्ञान उघाणा।
जी चाहवै जब भौं किम्मे ....॥

6. सुनहरासिंह नरवाल वैद्य-विद्वान् नहीं कैसे यें वैदिक विधि बताई।
अध्ययन-अभ्यास-अनुभव अति-नित रहै कला-सवाई।
कानून-रक्षक थानेदार मैं तूर्त लिखूं बणा कविताई।
हरदम फर्ज निभै जनहित में करता काम भलाई।
कोई सुणता-गिनता हो तै सुणियो यू कायाकल्प हितैषी गाणा।
जी चाहवै जब भौं किम्मे ....॥

–सुनहरा सिंह नरवाल रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर हरयाणा पुलिस रोहतक, निवास-नरवाल हाउस नियर 'ओमेक्स सिटी' दिल्ली रोड रोहतक। मो० 09416357176

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत का परीक्षा परिणाम अत्यन्त सराहनीय रहा

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत का वर्ष 2017-2018 का 12वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम अति सराहनीय रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उपरोक्त विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ शानदार परीक्षा परिणाम के लिए विद्यालय के होनहार छात्रों, मेहनती अध्यापकों, प्रिंसिपल तथा स्थानीय प्रबन्ध समिति को शुभकामनाएं एवं बधाई देती है तथा अपेक्षा करती है कि आगामी वर्ष का परीक्षा परिणाम और ज्यादा श्रेष्ठ रहे। परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा-

12वीं कक्षा में कुल छात्र	=407
12वीं कक्षा का घोषित परीक्षा परिणाम	=405
12वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्र	=357
12वीं कक्षा कुल पास प्रतिशत	=88.14
12वीं कक्षा में मैरिट में आए छात्र	=27
12वीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र	=86

इस वर्ष बोर्ड की बारहवीं कक्षा का परिणाम 63.84% रहा, जबकि इस विद्यालय का परीक्षा परिणाम 88.14 है, जो कि बोर्ड के परीक्षा परिणाम से 24.3% अधिक है।

-उमेद शर्मा, सभामन्त्री

सत्यं वद ओ३म् धर्मं चर

स्वाध्यायान्मा प्रमदः=सुख, शान्ति, तृप्ति, समृद्धि को चाहने वाले को ज्ञान-विज्ञान की बातें सुनने में प्रमाद नहीं करना चाहिए।

सूचना

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि 16 जून 2018 को दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर (रोहतक) के निदेशक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक दर्शन योग महाविद्यालय में पधार रहे हैं। उनके आध्यात्मिक प्रवचनों व आध्यात्मिक शंका-समाधान की शृंखला का समायोजन किया गया है। कार्यक्रम की रूपरेखा निम्न प्रकार रहेगी-

शनिवार, 16 जून 2018 मध्याह्न 2 से 4 बजे तक

रविवार, 17 जून से मंगलवार, 19 जून 2018 तक

प्रातः : 07.15 से 07.45 बजे तक वेद-प्रवचन

प्रातः : 10.00 से 11.30 बजे तक न्यायदर्शन/शंका-समाधान

मध्याह्न : 02.30 से 04.30 बजे तक न्यायदर्शन/शंका-समाधान

रात्रि : 08.30 से 09.30 बजे तक आत्म-निरीक्षण

स्थान-दर्शन योग महाविद्यालय,
महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर (रोहतक)
चलभाष : आचार्य-7027020175
स्वामी-7027026176, प्रबन्धक-9355674547

श्री विद्यासागर आर्य दिवंगत

आर्यसमाज के गौरव, प्रसिद्ध भजनोपदेशक (श्री कन्हैयालाल आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के जीजा) श्री विद्यासागर आर्य जी का निधन 04.05.2018 को प्रेमनगर उत्तमनगर नई दिल्ली में उनके निवास स्थान पर हुआ। उनकी श्रद्धांजलि सभा 07.05.2018 को आर्यसमाज विकासपुरी 'डी' ब्लाक नई दिल्ली में स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी एवं आचार्य सूर्यदेव शास्त्री जी के सान्निध्य में हुआ। वह अपने पीछे अपनी पत्नी श्रीमती पुष्पादेवी आर्या, सुपुत्र श्री अश्वनी कुमार (दीपिका) आर्य, सुपुत्री श्रीमती गायत्री (अनिल) अरोड़ा को छोड़कर गए हैं। उन्होंने अपने जीवन के 72 वसन्त देखे हैं। मान्यवर विद्यासागर आर्य जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक को सहयोग देते रहे हैं। उनके निधन से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के सभी सदस्य कार्यकर्त्ता एवं अधिकारी हार्दिक शोक अनुभव कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा से करबद्ध प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

भूल-सुधार

आर्य वीरांगना स्वरक्षा तथा चरित्र निर्माण शिविर

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक में दिनांक 11 जून से 17 जून 2018 तक आर्य वीर दल रोहतक मण्डल की ओर से ग्रीष्मावकाश में आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा जिसमें कक्षा 6 से 12 तक की बेटियां भाग ले सकेंगी। आत्मरक्षा, लाठी, जुडो-कराटे, आसन, प्राणायाम, रस्साकूद, तलवार के अतिरिक्त सन्ध्या-यज्ञ एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष परीक्षण दिया जायेगा।

शिविर में सफेद सलवार कमीज, कान के माप की लाठी, नोटबुक, सफेद जुराब, जूते, थाली, गिलास, चम्मच एवं हल्का बिस्तर लाना अनिवार्य होगा।

शिविर का उद्घाटन 11 जून सायं 6 बजे तथा समापन 17 जून प्रातः 9 से 12 बजे तक होगा। समय-समय पर विद्वानों, योग्य प्रशिक्षकों द्वारा बौद्धिक ज्ञान दिया जाएगा। -देशराज आर्य, मण्डलपति

सम्पर्क सूत्र-9215212533, 9416211809, 9466749992

श्री राजेश आर्य तिलक नगर रोहतक के गृह प्रवेश के अवसर पर यज्ञ में उपस्थित मुख्यातिथि सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

श्री राजेश आर्य तिलक नगर रोहतक के गृह प्रवेश के अवसर पर यज्ञ में आहुति डालते आर्यजन।

श्री अत्तरसिंह क्रांतिकारी की श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

श्री अत्तरसिंह क्रांतिकारी की श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित आर्यजन।

ओ३म्

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर

03 जून 2018 से 10 जून 2018

आचार्य बलदेव जी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक

पंजीकरण प्रारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आर्य समाज शिविरों के माध्यम से युवाओं को नशामुक्ति, चरित्र निर्माण, वैदिक संस्कार, ब्रह्मचर्य शिक्षा, राष्ट्रसेवा की भावनाओं को भरकर अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस दूषित वातावरण में अपनी सन्तानों को सुसंस्कार देना चाहते हैं तो आप अपने बच्चों को इस शिविर में जरूर भेजें।

आवश्यक सामान 2 खाकी हॉफ पेन्ट, 2 सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, 2 सफेद मौजे, 2 लंगोट, लाठी, कॉपी-पेन, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान।

नोट

- शिविरार्थियों को 03 जून को प्रातः 9 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंचना अनिवार्य है।
- अपने साथ मोबाइल, कैमरा एवं अन्य कीमती सामान साथ न लाएं।
- शिविर में पूर्ण अनुशासन में रहना होगा अन्यथा उसे शिविर से पृथक् कर दिया जाएगा।

प्रवेश शुल्क

300 रु/- (दो पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाएं।)

शिविर केवल 13 से 20 वर्ष के लड़को के लिए है।

निवेदक : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक 08199938001, 9416503513

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

"आर्य प्रतिनिधि" लौटाने का पता :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा